प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

सूत्रकृमि की समस्या एवं प्रबंधन विषय पर कार्यशाला का आयोजन

पंतनगर। ०४ जुलाई २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय एवं अखिल भारतीय समन्वित सूत्रकृमि परियोजना, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान द्वारा एक-दिवसीय ''औद्यानिक फसलों में सूत्रकृमि की समस्या एवं प्रबंधन'' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कृषि महाविद्यालय के सभागार में हुआ, जो कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित किया गया है, इस अवसर पर कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, के साथ विशेष अतिथि आर.के. वालिया, परियोजना समन्वयक अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (सूत्रकृमि) अधिष्ठाता, कृषि, डा. जे. कुमार, और विभागाध्यक्ष पादप रोग विज्ञान विभाग, डा. के. विशुनावत उपस्थित थे।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. ए.के. मिश्रा ने कहा कि पृथ्वी पर एक मिलियन से ज्यादा सूत्रकृमि की प्रजातियां है, जो मनुष्य, जानवर और वनस्पतियों को नुकसान पहुंचाती है। इसके अतिरिक्त कुछ सूत्रकृमि मृदा में उपस्थित होकर उसकी उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है वहीं हानिकारक सूत्रकृमि पौधो की जड़ो को क्षतिग्रस्त कर देते है, इस कारण से जड़ों के द्वारा पौधो को पोषक तत्व नही प्राप्त हो पाते हैं और यह सूत्रकृमि कृषि के उत्पादों में ८० प्रतिशत तक नुकसान पहुंचाते है। उन्होंने बताया कि भारत वर्ष में सूत्रकृमि द्वारा २१००० मिलियन रूपये से भी ज्यादा नुकसान पहुंचता है। प्रो. मिश्रा ने कहा कि अभी किसानों के पास सूत्रकृमि के बारे में ज्यादा जानकारी नही है अतः इस क्षेत्र में ज्यादा शोध और कार्यों को करने के साथ-साथ सुचारू रूप से प्रचार करने की भी आवश्यकता है ताकि किसान जागरूक हो पाये। उन्होंने कहा कि आज के इस कार्यक्रम में निश्चित ही किसान सूत्रकृमि के क्षतिग्रस्त तरीके और उपचार के बारे में जानने और यह जानकारी आप लोग अन्य किसानों से भी साझा करेंगे।

अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार ने कहा कि रोगों की वजह से आज गेहूं में २८ प्रतिशत धान में ३८ प्रतिशत, आलू में ४१ प्रतिशत और सोयाबीन में ३१ प्रतिशत फसलों में नुकसान होगा। फसलों में होने वाले रोगों के कारणों में सूत्रकृमि भी महत्वपूर्ण है। यह सूत्रकृमि खाद्यान्न, सब्जी और फलों को प्रभावित करता है। उन्होंने बताया कि लघु किसान अधिक उत्पादन और आमदनी अर्जित के लिए पालीहाउस में खेती कर रहें हैं, लेकिन पाली हाउस में खेती की जमीन स्थिर है और इसी जमीन पर बार-बार अलग-अलग फसल उगाने से सूत्रकृमि सक्रिय हो जाते है। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि के प्रति जानकारी और नियंत्रण के लिए विश्वविद्यालय में जल्द ही शोध कार्य शुरू किया जायेगा। एआईसीआरआईपी के अन्तर्गत इस विषय पर अनुसंधान कार्य और प्रभावशाली होने की उम्मीद भी जताई।

विशेष अतिथि आर.के. वालिया ने बताया कि १९८९ से प्रारम्भ अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (सूत्रकृमि) आज भारत के विभिन्न क्षेत्रों में २३ सेन्टर के साथ काम कर रही है। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि मृदा में रहकर पौधों को क्षति पहुंचाते है और इसके लक्षण पौधे के ऊपरी सतह पर दिखाई देते है, जिन्हें किसान पोषण की कमी या अन्य कारण जानकर पहचान नही पाते है, जिससे इसका उचित प्रबंधन नही हो पाता। डा. वालिया ने कहा कि पिछले कुछ दशकों से सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव फसलों और फलों पर ज्यादा दिखाई दिये है। आज के समय में सूत्रकृमि सबसे ज्यादा पालीहाउस में लगी फसलों और नये लगाये बागों को प्रभावित कर रहा है।

इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए डा. विशुनावत ने कहा कि किसानों को सूत्रकृमि से होने वाली समस्या को पहचानने के साथ ही इनके नियंत्रण के लिए मृदा की जांच और मृदा उपचार के बारे में जानकारी दी जायेगी, साथ ही उन्हें प्रायोगिक कार्यो द्वारा भी जागृत किया जायेगा। कार्यक्रम के अंत में परियोजना समन्वयक, डा. सत्य कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम का संचालन विभाग के कृषि स्नातकोत्तर विद्यार्थी दीपक प्रकाश ने किया। इस कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न जिलों के किसानों के साथ वैज्ञानिक अधिकारी और विद्यार्थी उपस्थित थे।